Indian J. Soc. & Pol. 05(I):2018:107-112 Special Issue **ISSN : 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

मदात्ययियों की व्यक्तिगत और सामाजिक विशिष्टताएँ

अरिमर्दन सिंह[1a]
[a]प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग, श्री म0रा0दा0पी0जी0का0, भुड़कुड़ा, गाजीपुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

समस्या के किसी अग्रिम जाँच पर पहुँचने से पूर्व यह आवश्यक है कि मदात्ययियों के वैयक्तिक और सामाजिक विशिष्टताओं के सम्बन्ध में एक सामान्य व्याख्यात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की जाय ताकि आगे के अध्यायों में निष्कर्ष प्राप्त करने में सहायता प्राप्त हो सके। यद्यपि इन मदात्ययियों की समस्याएँ सामान्य सामाजिक समस्याओं से भिन्न है। जिन मदात्ययी उत्तरदाताओं को प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है वे नवचेतना केन्द्र में उपचार प्राप्त कर रहे हैं तथा उनकी समस्याओं में उन मदात्ययियों की समस्याओं से कुछ अन्तर अवश्य है तथा उनके दृष्टिकोण में भी अन्तर देखा जा सकता है। इन मदात्ययी उत्तरदाताओं का व्यक्तित्व और वातावरणीय पृष्ठभूमि भी पृथक है तथा वे अच्छे व्यवहार के प्रति खतरनाक हैं। ऐसे लोग समाज में विचलित व्यवहार करने वाले होते हैं तथा इनके आर्थिक सामाजिक वातावरण भी अलग किस्म के होते हैं।

KEYWORDS: *मदात्ययी, मद्यपान, नशा खोरी, नशा उन्मूलन*

प्रश्न उठता है कि मदात्ययी कौन है? एक व्यक्ति मद्यपान क्यों करता है? वे कौन से कारके हैं जो व्यक्ति को मद्यपान के लिए प्रेरित करते हैं? मद्यपान की अधिकतम सीमा क्या है? मदात्ययियों द्वारा कौन सी मदिरा का सेवन अधिकाधिक रूप में किया जाता है? मदिरा प्राप्ति के क्या साधन है? ऐसे प्रश्नों को उत्तरित करने के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि ऐसे मदात्ययी उत्तरदाताओं के सामाजिक व वैयक्तिक पृष्ठभूमि का अध्ययन इनकी संख्या का नमूना लेकर किया जाय। अतः प्रस्तुत अध्ययन के इस अध्याय में नमूना लेकर इनकी सामान्य विशेषताओं को जानने का प्रयास किया गया है। इनकी सामान्य विशेषताओं को जानने के लिए आयु, वैवाहिक स्तर, शिक्षा, आय, जाति धर्म, पेशा आदि का साक्षात्कार अनुसूची में शामिल किया गया है। ये विभिन्न चर मदात्ययी उत्तरदाताओं द्वारा मदिरा के उपयोग और अत्यधिक उपयोग के विभिन्न तरीकों से सम्बन्धित है।

वैयक्तिक परिचय :

उत्तरदाताओं के वैयक्तिक परिचय के अन्तर्गत उन कारकों को समाहित किया गया है जो उसके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं अथवा उसके व्यक्तित्व का निर्माण करने में सहायक होते हैं। इन कारकों में लिंग, आयु, वैवाहिक स्तर, जाति, धर्म, शैक्षिक स्तर, निवास, व्यावसायिक स्तर, पारिवारिक स्वरूप, परिवार का आकार, मित्र मण्डली, आर्थिक स्तर, आय आदि प्रमुख है।

लिंग :

भारतीय समाज में प्रायः यह देखा जाता है कि मद्यपान अधिकतर पुरुष ही करता है। महिलाएँ पुरुषों की तुलना में मद्यपान कम करती हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि महिलाएँ मद्यपान करती ही नहीं है। महिलाएँ भी मद्यपान करती हैं किन्तु सामान्य रूप से इनकी संख्या पुरुषों की तुलना में बहुत कम ही है। प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत मदात्ययी महिला उत्तरदाता उपलब्ध नहीं हुई इसी कारण उन्हें समग्र में सम्मिलित नहीं किया जा सका है। इस प्रकार मद्यपान का सम्बन्ध लिंग से भी है। अतः यह कहा जा सकता है कि महिलाएँ भी मद्यपान करती हैं किन्तु वे एक सीमा में और मर्यादा के अन्तर्गत ही मदिरा– पान करती हैं जबकि पुरुष मदिरा–पान का आदती होते–होते मदात्ययी बन जाता है तथा समाज और देश के लिए समस्या बन जाता है।

आयु :

वैयक्तिक कारकों में आयु एक महत्वपूर्ण कारक है। आयु का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर निश्चित रूप से पड़ता है। आयु के साथ व्यक्ति के विचार और दृष्टिकोण में भी परिवर्तन होता है। अतः आयु को व्यक्ति की अनेक विशिष्टताओं में से एक महत्वपूर्ण विशिष्ट माना जाता है। आयु व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति और भूमिका का निर्धारण करती है। आयु में बृद्धि के साथ ही व्यक्ति की जिम्मेदारियों मे भी वृद्धि होती जाती है जिससे उसकी परिवार तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व प्रस्थिति और भूमिका में भी परिवर्तन होता जाता है। मद्यपान का भी आयु से गहरा सम्बन्ध है। कुछ व्यक्ति अपनी बढ़ती जिम्मेदारियों तथा तनाव से मुक्ति पाने के लिए मदिरा–पान करते हैं। तो कुछ शौक वश तथा कुछ बुरी संगत में पड़ जाने के कारण मद्यपान करने लगते हैं। वर्तमान समय में विभिन्न आयु समूहों के व्यक्ति मदिरापान कर रही हैं। युवा वर्ग में मद्यपान एक आकर्षण का रूप धारण करता जा रहा है जिसे देश और समाज के लिए किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं कहा जा सकता है।

योस्ट (1954) ने अपने अध्ययन के दौरान यह पाया कि 21 वर्ष तक की आयु के लोग जो विशेष वर्ग से सम्बन्धित है मात्र इसलिए मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं। क्योंकि वे परिवारिक, सामाजिक और विद्यालयीय जीवन में वास्तविक सफलता प्राप्त करने में असफल रहे हैं। ऐसे लोगों में से अधिकांश मदिरा की ओर उन्मुख

1: Corresponding Author

हो जाते हैं। इसका कारण यह है कि मदिरा अन्य मादक द्रव्यों की तुलना में आसानी से प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्ध हो जाती है तथा इसके सेवन वाले समाज में प्रत्येक क्षेत्र में आसानी से प्राप्त हो जाते है। ऐसे लोगों के साथ युवा वर्ग अपनी हताश से मुक्ति पाने के लिए मद्यपान करने लगता है।

भारतीय सन्दर्भ में काडन्डारेम और मूर्ति (1979) ने 300 कैदियों पर एक अध्ययन किया। उक्त अध्ययन में उन्होंने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि युवावस्था के प्रारंभिक चरण में प्रायः लोग मदिरा का सेवन करने लगते है और बाद मे अन्य मादक दव्यों के सेवन से परहेज नहीं कर पाते। खान (1978) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया है कि मादक द्रव्यों के उपयोग की बारम्बारता आयु में बृद्धि के साथ बढ़ती जाती है अर्थात् मादक द्रव्यों के सेवन और आयु में धनात्मक सम्बन्ध है। इसके अलावा ऐसे लोग मदात्ययी औश्र नियमित मादक द्रव्यों का उपयोग आयु तथा लिंग के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। मल्होत्रा (1978) के अनुसार मादक द्रव्यों के उपयोग की आयु के आधार पर तुलना करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मादक द्रव्यों का उपयोग करने वालों में कम आयु समुह के लोगों की संख्या तुलनात्मक रुप से अधिक है। दूबे (1978) ने यह निष्कर्ष प्राप्त किया है कि मादक द्रव्यों के सेवन की सर्वाधिक समस्या 16 से 24 वर्ष के आयु समूह के लोगो में अधिक है। उन्होनें आगे यह भी बताया कि मादक द्रव्यों का सेवन करने वालों में पुरुषों में औसत आयु 22 वर्ष तथा महिलाओं में 21 वर्ष है। खान और उन्नीथन (1979) ने यह बताया है कि मादक द्रव्य का सेवन करने वाले प्रारंभिक व्यक्तियों की संख्या पहले से मादक द्रव्यों का उपयोग करने वाले लोगों की तुलना में कम है। देव (1980) ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि व्यक्ति प्रायः 17.5 वर्ष की आयु से मादक द्रव्य का सेवन आरम्भ करता है। मोहन (1980) ने बतलाया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 50 प्रतिशत लोग प्रायः 25 वर्ष से पुर्व ही मद्यपान आरम्भ कर देते है। इस प्रकार उपर्युक्त अध्ययन आयु का सम्बन्ध मादक द्रव्यों के सेवन से स्थापित करते है। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न आयु समूहों में मद्यपान करने वाले उत्तरदाताओं कि स्थिति सारिणी संख्या–1 द्वारा प्रस्तुत की गयी हैः–

सारिणी संख्या–1
उत्तरदाताओं की आयु

आयु समूह (वर्षों में)	उत्तरदाता	
	संख्या	प्रतिशत
20 वर्ष से नीचे	13	6.5
20–30	105	52.5
31–40	60	30.0
41–50	12	6.0
51–60	6	3.0
61 वर्ष एवं इससे अधिक	4	2.0
योग	200	100.0

सारिणी संख्या–1 से यह स्पष्ट है कि 20 वर्ष से कम आय वाले मदात्ययी उत्तरदाताओं की संख्या 6.5 प्रतिशत है। इसी प्रकार 40 वर्ष से अधिक आयु समूह के उत्तरदाताओं कि संख्या 6.0 प्रतिशत है जो इस संख्या के आस–पास ठहरती है। सारिणी को देखने से यह स्पष्ट होता है कि मदात्ययी उत्तरदाताओं की सर्वाधिक संख्या 52.5 प्रतिशत 31–30 वर्ष आयु समूह की है जिसे समाज और देश के लिए शुभ संकेत नहीं माना जा सकता है। इतना ही नहीं 51–60 वर्ष आयु समूह के 3 प्रतिशत उत्तरदाता मदात्ययी पाये गये तथा 61 वर्ष या इससे अधिक आयु के 2 प्रतिशत उत्तरदाता मदात्ययी पाये गये। अतः यह कहा जा सकता है कि आयु में वृद्धि के साथ मद्यपान का ऋणात्मक सम्बन्ध है। देश का युवा वर्ग का इतनी बड़ी संख्या में मदात्ययी होना मानव संसाधन का दुरुपयोग है तथा इस दिशा में सार्थक प्रयात की आवश्यकता है। इसके बाद 31 से 40 वर्ष आयु समूह के उत्तरदाताओं की संख्या 30 प्रतिशत है जिसे युवा से प्रौढ़ के मध्य रखा जा सकता है। अतः यदि युवावस्था के प्रारंभिक चरण और प्रौढ़वस्था को मिलाकर देखा जाय तो मदात्ययी उत्तरदाताओं की तस्वीर बहुत ही भयावह दिखलाई पड़ती है। इन दोनो का योग करने पर यह संख्या 82.5 प्रतिशत हो जाती है।

अतः उपकल्पना संख्या–3 की पुष्टि अध्ययन में प्राप्त आकड़ों के आधार पर होती है कि 20 से 40 वर्ष आयु वर्ग में तीव्र पियक्कड़ों का अनुपात सबसे अधिक है तथा 40 वर्ष या इससे आयु वर्ग में तीव्र पियक्कड़ों का अनुपात निम्नतम है।

सारिणी संख्या–2
उत्तरदाताओं की वर्तमान आयु के मध्यमान की गणना

धर्म	उत्तरदाता		
	मध्यमान	संख्या	मध्यमान और संख्या
20 वर्ष से कम	15.5	15	232.5
21–30 वर्ष	25.5	121	3085.5
31–40	35.5	48	1704.0
41–50	45.5	12	546.0
51–60	55.5	4	222.0
योग		**200**	**5790.0**

$a= \Sigma mf/\Sigma f=5790/200$

a=28-95 years

'a' indicate Mean or average age

सांख्यिकीय गणना बतलाती है कि उत्तरदाताओं की मध्य आयु 28.95 वर्ष है।

उत्तरदाताओं को आयु वर्ग के आधार पर निम्नलिखित चार प्रमुख वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :–

क–बहुत युवा ख–युवा ग–मध्य अवस्था घ–वृद्धावस्था

यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि 20 वर्ष तक की आयु के उत्तरदाताओं को बहुत युवा की श्रेणी में रखा गया है। 21 से 30 वर्ष की आयु समूह के उत्तरदाताओं को युवा तथा 31–40 वर्ष की आयु समूह के उत्तरदाताओं को मध्य अवस्था वाले वर्ग में माना गया है। 40 से 60 वर्ष और उससे अधिक के आयु समूह के उत्तरदाताओं को बृद्धावस्था के अन्तर्गत रखा गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में 200 उत्तरदाताओं को अध्ययन के लिए चयनित किया गये है। इस प्रकार 200 उत्तरदाताओं के अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सारिणी संख्या–3.3 प्रस्तुत की गयी है। सारिणी के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि बहुत युवा अर्थात 20 वर्ष से नीचे की आयु वर्ग में 7.5 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। सर्वाधिक उत्तरदाता युवा वर्ग अर्थात् 21–30 वर्ष आयु समूह के हैं। मध्य अवस्था वाले अर्थात 31 से 40 वर्ष आयु समूह के उत्तरदाताओं की संख्या 24 प्रतिशत है जबकि वृद्धावस्था अर्थात 41 से 60 वर्ष और अधिक आयु समूह के उत्तरदाताओं को इस वर्ग के अन्तर्गत समाहित किया गया है जिनकी उत्तरदाताओं की संख्या 8 प्रतिशत है।

सारिणी संख्या–3
उत्तरदाताओं का आयु समूह

आयु समूह (वर्षों में)	उत्तरदाता	
	संख्या	प्रतिशत
बहुत युवा	15	7.5
युवा	121	60.5
मध्य अवस्था	48	24.0
वृद्ध	16	8.0
योग	**200**	**100.0**

वैवाहिक स्तर

विवाह भारतीय समाज में एक संस्कार माना जाता है। विवाह व्यक्ति के जीवन में अनेक जिम्मेदारियों तथा संसार में संलग्न करने वाला कारक बनता है। यह एक प्रस्थिति का प्रदान करने वाला साधन है। विवाहित व्यक्ति अपने वैवाहिक जीवन के कार्यों में संलग्न हो जाता है तथा उससे सामाजिक संतुष्टि प्राप्त करने का प्रयास करता है।

हैरोल्ड, बुखार्ट और सथमैरी (1964) मे यह बतलाया है कि अविवाहित व्यक्ति मादक द्रव्यों का अधिक सेवन करता है। दूसरी ओर रोड्रीग्वेज (1966) ने भाषा के आधार पर अपने 20 वर्षों के समय के अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया है कि मद्यपान की समस्या वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित नहीं है। इसी प्रकार का विपरीत परिणाम खान (1978) ने अपने अध्ययन में प्राप्त किया है कि अविवाहित छात्रों के अनुपात में विवाहित छात्रों में मदिरा के नियमित सेवन और आदतन सेवन की प्रवृत्ति अधिक है। भारतीय समाज में नारियों को अत्यधिक महत्व प्रदान किया गया है और कहा गया है कि यदि नारी बुद्धिमान, पतिव्रता और सांस्कारिक है तो वह अपने पति को बुरे मार्ग से हटाकर अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करती है तथा बुरे से बुरा व्यक्ति अपने बुरे कार्यों को छोड़कर ऐसे मार्ग पर चलने लगता है जिसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। व्यक्ति विवाह जैसे संस्कार के उपरान्त अपना गृहस्थ जीवन आरम्भ करता है और इनके प्रकार की जिम्मेदारियां उसेक कन्धे पर आ जाती है जिन्हें पूरा करना उसका कर्तव्य माना जाता है। कुछ लोग इन्हीं जिम्मेदारियों के वहन में आने वाले तनाव से मुक्ति पाने के लिए मदिरा जैसी नशीली वस्तु का उपयोग प्रारम्भ कर देते है जो कालान्तर में ऐसे व्यक्ति को मदात्ययी बना देता है। नियमित रुप से मदिरा–पान की आदत के चलते व्यक्ति परिवार और समाज से अलग महसूस करने लगता है तथा धीरे–धीरे उसमें निराशा की भावना उत्पन्न होने लगती है जिसका दुष्प्रभाव उस व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है। मदात्ययी व्यक्ति अपने मद्यपान की आदतों के कारण समाज और परिवार तथा अन्ततः देश के लिए समस्या बन जाता है। इसी कारण मदात्ययी उत्तरदाताओं के वैवाहक स्तर को जानने का प्रयास किया गया है। निम्नलिखित सारिणी उत्तरदाताओं के वैवाहिक स्तर को स्पष्ट करती हैः–

सारिणी संख्या–4
उत्तरदाताओं का आयु समूह

वैवाहिक स्तर	उत्तरदाता	
	आवृत्ति	प्रतिशत
अविवाहित	57	28.5
सगाई किया हुआ	0	0
विवाहित	139	69.5
विधुर	2	1.0
तलाकशुदा	2	1.0
योग	**200**	**100.0**

सारिणी से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता अर्थात् 69.5 प्रतिशत विवाहित है जब कि 28.5 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित है। विधुर उत्तरदाताओं की संख्या 1 प्रतिशत तथा तलाकशुदा उत्तरदाताओं की संख्या 1 प्रतिशत है। ऐसे उत्तरदाता, जिनकी सगाई अथवा मंगनी हाल ही में हुई हो, की संख्या समग्र में एक भी नहीं पायी गयी।

सारिणी के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विवाहित उत्तरदाताओं की संख्या तुलनात्मक रुप से अधिक है। इस प्रकार सारिणी यह स्पष्ट करती है कि विवाहित वर्ग के उत्तरदाताओं में अविवाहित वर्ग के उत्तरदाताओं की तुलना में मदिरा सेवन की प्रवृत्ति अधिक है।

इस प्रकार उपकल्पना संख्या–4 की पुष्टि होती है कि विवाहित वर्ग में मदात्ययियों का अनुपात अधिक होता है लेकिन अविवाहित वर्ग में भी उनकी संख्या होती है।

जाति

भारतीय समाज मे जाति का महत्वपूर्ण कारक है। यह व्यक्ति के जीवन को बहुत अधिक प्रभावित करता है। भारतीय समाज अनेक जातियों में बंटा हुआ है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में अनेक जातियाँ निवास करती हैं। जाति

व्यवस्था ने निःसंदेह भारतीय समाज में बहुत से परिवर्तन उपस्थित किये है। भारत में जाति का निर्धारण वंशानुगत होता है। बच्चा के माता–पिता जिस जाति के होते है वह बड़ा होकर उसी जाति का सदस्य बन जाता है तथा उसके सारे कार्य–कलाप अपनी जाति के आधार पर निर्धारित होने लगते है। मदिरा सेवन का भी जाति से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। कुछ जातियों में मदिरा–पान बिल्कुल बुरा नहीं माना जाता है तथा उस जाति के लोग मदिरा का प्रयोग खुल कर करते है। दूबे (1975) ने अपने अध्ययन में यह पाया है कि विभिन्न जाति समूहों के लोग विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों का प्रयोग करते है। उदाहरण के लिए भांग का अधिक प्रयोग ब्राह्मण और वैश्य द्वारा किया जाता है तथा क्षत्रिय द्वारा गांजा का अधिक उपयोग किया जाता है। आहूजा (1978) का मानना है कि अनुसूचित जनजाति, ईसाई, जैन और कायस्थ मादक द्रव्यों का अधिक उपयोग करते हैं लेकिन मुस्लिम, ब्राह्मण और वैश्य मादक द्रव्यों का कम उपयोग करते हैं। खान (1978) ने यह निष्कर्ष प्राप्त किया है कि ब्राह्मण, वैश्य और कायस्थ मदिरा का अधिक उपयोग करते है जबकि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोग तम्बाकू का अधिक उपयोग करते है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारतीय समाज में नशीले पदार्थों का सेवन बहुत पहले से होता आ रहा है तथा आज भी लोग नशे की चीजों का उपयोग करते हैं। किन्तु वर्तमान समय में नशे की वस्तुओं के अनेक प्रकार के ऐसे नशे शामिल हो गये है जो व्यक्ति और समाज दोनो को खोखला कर रहे है। मदिरा–पान का बढ़ता शौक निःसंदेह भारतीय समाज और विशेषकर युवा वर्ग के लिए अभिशाप बनता जा रहा है। आरम्भ में व्यक्ति शराब पीता है किन्तु कालान्तर में शराब व्यक्ति को पी जाती है।

जाति के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण निम्नलिखित सारिणी संख्या 5 द्वारा प्रस्तुत किया गया हैः–

सारिणी संख्या–5
उत्तरदाताओं का आयु समूह

वैवाहिक स्तर	उत्तरदाता	
	आवृत्ति	प्रतिशत
सर्वण	99	49.5
पिछड़ी जाति	47	23.5
अनुसूचित जाति	38	19.0
अन्य जाति समूह	16	8.00
योग	**200**	**100.0**

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि मदिरा–पान करने वालों में सर्वाधिक संख्या 49.5 प्रतिशत सवर्ण जाति के उत्तरदाताओं की है। दूसरे स्थान पर पिछड़ी जाति के उत्तरदाताओं की संख्या है जिनका समग्र में प्रतिशत 23.5 है। तीसरे स्थान पर मदिरा–पान करने वाल अनुसूचित जाति के सदस्य है जिनकी संख्या 19.0 प्रतिशत है। इसके पश्चात अन्य जाति के मदात्ययी उत्तरदाताओं की संख्या 8.00 प्रतिशत पायी गयी है। सवर्ण जाति के मदात्ययी उत्तरदाताओं की संख्या अधिक होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि इस वर्ग के लोगों में आर्थिक रुप से उच्च और मध्यम आय वर्ग के लोगों की संख्या अधिक होती है तथा ये विभिन्न प्रकार व्यवसायों में संलग्न हैं। कृषि, व्यापार, सेवा आदि। सवर्ण जातियों में मदात्ययी उत्तरदाताओं की संख्या अधिक होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि इन लोगों की आय निम्न अथवा पिछड़े वर्गों की अपेक्षा तुलनात्मक रुप से अधिक है तथा इनमें से अधिकांश परिवार अपने को अग्रिम पंक्ति का परिवार मानते है और ऐसे परिवार के लोगों के लिए मद्यपान एक सामान्य बात है।

इस प्रकार उपकल्पना संख्या–5 की पुष्टि होती है कि उच्च जाति के पियक्कड़ों में मदात्ययियों का अनुपात निम्न जाति की तुलना में अधिक होता है।

शैक्षणिक स्तर

दुर्खीम (1955:7) ने सामाजिकीकरण के तरीकों में युवा वर्ग में शिक्षा को अत्याधिक महत्वपूर्ण साधन माना है। व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का बहुत महत्व है। सामाजशास्त्रीय दृष्टि से व्यक्ति में शिक्षा का होना इसलिए आवश्यक है क्योंकि शिक्षा व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाती है, समाज में सामाजिक समरसता और विभिन्न संस्थाओं की स्थापना में सहायक होती है। शिक्षा व्यक्ति को समाज में समायोजित करने में सहायता प्रदान करती है। दूबे (1975 : 106) ने शिक्षित और अशिक्षित लोगों के मध्य मादक द्रव्य के सेवन में महत्वपूर्ण अन्तर पाया है। अशिक्षित व्यक्ति गांजा का और शिक्षित व्यक्ति भांग का अधिक उपयोग करते हैं। इसी प्रकार मदिरा सेवन के सम्बन्ध में भी तथ्य सामने आया है कि शिक्षित व्यक्ति अच्छी किस्म की मदिरा का प्रयोग करते है जबकि अशिक्षित लोग घटिया किस्म की मदिरा का सेवन करने में परहेज नहीं करते है। यही कारण है जहरीली शराब के सेवन से मरने वालों की अधिकतर संख्या अशिक्षित लोगों की ही होती है। आहूजा (1978:73) ने यह निष्कर्ष प्राप्त किया है कि 13.8 प्रतिशत महिलाएं मादक द्रव्य का सेवन करने वाली थी जिनका शैक्षिक स्तर स्नातक से कम था तथा 19.5 प्रतिशत ऐसी महिलाएं थी जिनका शैक्षिक स्तर परास्नातक था। पुरुषों में यह प्रतिशत क्रमशः 34.4 और 62.9 पाया। आहूजा ने आगे कहा है कि मादक द्रव्यों के सेवन में प्रायः ऐसे नये महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के छात्रों की संख्या अधिक होती है जो कम से कम दो सेमेस्टर का समय व्यतीत कर चुके होते हैं। मादक द्रव्यों के प्रयोग की प्रवृ ित्त पुराने छात्रों में अधिक देखी गयी। जहां तक मदिरा सेवन का प्रश्न है तो वर्तमान समय में इसका प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है अतः शिक्षित अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों में मद्यपान की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है जो समाज तथा देश के भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं है। मल्होत्रा (1978:77) ने अपने अध्ययन द्वारा यह सिद्ध किया है कि 84 प्रतिशत शिक्षित व्यक्ति मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं जिसमें से 91 प्रतिशत मदिरा का सेवन करते हैं जो अशिक्षित लोगों द्वारा मदिरा सेवन की तुलना में अधिक है।

शैक्षिक स्तर के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण साहिणी संख्या– 7 द्वारा प्रस्तुत किया गया है :–

सारिणी संख्या–6
शैक्षिक के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

शैक्षिक स्तर	उत्तरदाता	
	आवृ त्ति	प्रतिशत
अशिक्षित	25	12.5
साक्षर	31	15.5
हाईस्कूल से नीचे	59	29.5
हाईस्कूल	41	20.5
इण्टरमीडिएट या समकक्ष	25	12.5
स्नातक या समकक्ष	11	5.5
परास्नातक अथवा समकक्ष	06	3.0
अन्य	2	1.0
योग	**200**	**100**

सारिणी संख्या 6 से यह स्पष्ट है कि 29.5 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल स्तर से नीचे तक शिखा प्राप्त हैं। 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ऐसे हैं जिनकी शिक्षा का स्तर हाईस्कूल तक है। साक्षर उत्तरदाताओं की संख्या 15.5 प्रतिशत है। इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 12.5 प्रतिशत पायी गयी है। स्नातक या समकक्ष और परास्नातक अथवा अन्य स्तर की उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या क्रमशः 5.5 और 3.0 प्रतिशत पाया गया है। स्नातका त्तर के अतिरिक्त उच शिक्षा अथवा तकनीकी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक कम अर्थात् 2.0 प्रतिशत पायी गयी है।

इस प्रकार यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अधिकांश उत्तरदाता हाईस्कूल से कम स्तर की शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं। ऐसा संभवतः इसलिए है क्योंकि अशिक्षित अथवा साक्षर अथवा कम शिक्षित व्यक्ति मद्यपान के दुष्प्रभावों को अच्छे तरह नहीं समझ पाता है और मद्यपान के प्रति आकर्षित होता जाता है।

अतः उपर्युक्त अध्ययन से उपकल्पना संख्या–7 के प्रथम भाग की पुष्ट नहीं होती कि अधिक शिक्षित नगरीय मदात्ययियों में शिक्षा के स्तर के अनुसार मदात्ययियों का अनुपात अधिक होता है। यहाँ यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि स्तर बढ़ने के साथ मदात्ययियों का अनुपात कम होता गया है।

व्यावसायिक स्तर

जिस प्रकार व्यक्ति के निवास का उसके जीवन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार व्यवसाय का भी उसके व्यक्तित्व व आदतों के निर्धारण में प्रभाव पड़ता है। इसका कारण यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय अपने व्यवसाय में लगाता है चाहे वह व्यवसाय, कृषि, नौकरी, व्यापार अथवा अन्य कोई भी क्यों न हो ? व्यक्ति के व्यवसाय का उसके मद्यपान से गहरा सम्बन्ध है। व्यवसाय व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण करती है। व्यक्ति के पिता के व्यवसाय का भी उसके जीवन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। उसके पिता की सामाजिक प्रतिष्ठा और प्रस्थिति भी उसके जीवन को नियंत्रित व प्रभावित करने में सहायक होती है। अतः यहां पर निम्नलिखित सारिणी के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि मदात्ययी उत्तरदाताओं का व्यवसाय के आधार पर वर्गीकरण करने पर किस प्रकार का चित्र उपस्थित होता है

सारिणी संख्या–7
व्यवसाय के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

व्यवहाय	उत्तरदाता	
	आवृ त्ति	प्रतिशत
कृषि	29	14.5
व्यापार	103	51.5
स्थायी सरकारी नौकरी	12	6.0
स्थायी गैर सरकारी नौकरी	9	4.5
अस्थायी सरकारी नौकरी	8	4.0
अस्थायी गौर सरकारी नौकरी	17	8.5
त्कनीकी	8	4.0
अन्य	14	7.0
योग	**200**	**100**

सारिणी संख्या 7 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक अर्थात् 51.5 प्रतिशत मदात्ययी उत्त्रदाता व्यापारिक गतिविधियों में संलग्न हैं अर्थात् इन उत्तरदाताओं का व्यवसाय व्यापार है। इसके बाद दूसरे स्थान पर ऐसे मदात्ययी उत्तरदाताओं की संख्या है जिनका व्यवसाय कृषि है। ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या 14.5 प्रतिशत है। स्थायी रूप से सरकारी नौकरी करने वाले मदात्ययी उत्तरदाताओं की संख्या 6.0 प्रतिशत है जब कि अस्थायी रूप से गैर सरकारी नौकरी करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 9.0 प्रतिशत है। इसी प्रकार अस्थायी रूप से सरकारी नौकरी करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 4.0 प्रतिशत तथा अस्थायी रूप से गैर सरकारी नौकरी करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 8.5 प्रतिशत है। 4.0 प्रतिशत ऐसे मदात्यायी उत्तरदाता पाये गये जो तकनीकी कार्य सम्पन्न करते हैं। उपर्युक्त के अतिरिक्ति अन्य वर्ग में 7 प्रतिशत उत्तरदाता पाये गगये जिनका कार्य तकनीकी तथा गैर तकनीकी दोनों प्रकार का है। तथा ऐसे लोगों के व्यवसाय का कोई स्थायित्व नहीं है।

इस प्रकार उपकल्पना संख्या–5 के दूसरे भाग की पुनः पुष्टि होती है कि खतिहर निवासियों अर्थात् कृषि कार्य में संलग्न रहने वाले मदात्ययियों का अनुपात अपेक्षाकृत कम होता है।

इस प्रकार सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि व्यापार तथा व्यवसाय में संलग्न उत्तरदाताओं में मदात्ययियों की संख्या सर्वाधिक पायी गयी है। सारिणी से यह भी स्पष्ट होता है कि कृषि तथा सेवा के क्षेत्र में लगे लोगों में मद्यपान करने की आदत कम पायी गयी है। इसी कारण इस क्षेत्र में मदात्ययी उत्तरदाताओं की संख्या कम है। उपुर्यक्त के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय में लगे लोगों की संख्या भी तुलनात्मक रूप से कम है।

REFERENCE

Ahuja, Ram: "College Youth and Drug Abuse", A Sociological Study of nature and Incidence of Drug Abuse among College and University Students in Jaipur, *Mimeo.Jaipur*, Department of Sociology, University of Rajasthan, Jaipur, 1978.

Bukhart, W.R. and Sathmary, A: 'An Evaluation of a Treatment Control Project for Narcotics Offenders : Phase I and II "*Journal of Research in Crime and Delinquency*", I pp 47,1964

Dev, Shankar : "An Investigation into the sources of supply and Information about drug Amongst students in the Campus." *Indian Journal of Criminology*, 8, 2, 135-140,1980.

Dube, K.C, Jain, S.C., Basu, A.K. & Kumar N : Pattern of Drug Habit in Hospitalized Psychiatric Patients." *Bulletin on Narcotics*, XXVII, 2, 1-10, 1975.

Dube, K.C., Kumar, A. and Gupta, S.P. : "*Prevalence and pattern of Drug Use Amongst College Students*" *Acta Psychiat scand*, 37, 336-356,1978.

Durkheim, E. : Sociology and Education, Free Press, New York, 1958.

Kapadia, K.M.: Marriage and Family in India, Oxford University Press, Calcutta,1968.

Khan, M.Z. : "Social Correlates of Drug Use Amongst College Students in Jabalpur Town", *Mimeo*, *Sagar Department of Criminology* and *Forensic Science*, University of Sagar, 1978.

Khan, M.Z. and Unnithan, N.P. : "Socio-cultural Differences between Former and Current Users of College Students", *Bulletin of Narcotics*, 31, 3 and 4, 95-108, 1979.

Kondandaram, P and Murthy, V.N. : "Drug, Abuse and Crime" A Preliminary Study, *Indian Journal of Criminology*, 7, 1, 65-3, 1979.

Krishna, K.P. and Khan M.Z. : 'Tobacco Smoking Amongst Youth", *Indian Journal of Youth Affairs*, 1981.

Malhotra, A.K.: Kapur, R.L. and Murthy, V.N. :"Drug Dependence-A Preliminary Survey of Hospital Registrations" *Indian Journal of Criminology*, 5, 131-137,1978.

Mohan, D. Thomas, M.G. and Prabhu G.G. : "Prevalence drug abuse in high school population", *Paper Presented at International Working Group Meeting on Alcohol and Drug Dependence, Manila*, 1915.

Mohan D. and Arora A. : "*Prevalence and pattern of drug abuse among Delhi*